

विनम्र श्रद्धांजलि

लोक विज्ञान परिषद् के संरक्षक और आधुनिक भारतीय विज्ञान के शिल्पकारों में से एक - प्रोफेसर श्री कृष्ण जोशी

15 मई 2020 का दिन, भारतीय विज्ञान अन्वेषण और संचार के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए, विशेषकर लोक विज्ञान परिषद् परिवार के लिए एक दुखद दिन रहा। समाचार आया कि पद्मभूषण डॉ. श्री कृष्ण जोशी का शरीर शांत हो गया है। वे 86 वर्ष के थे और पिछले कुछ समय से जंघा के कैंसर के कारण बिस्तर पर थे। डॉ. जोशी ने एक अत्यंत सक्रिय जीवन जिया, 190 से अधिक श्रेष्ठ शोध पत्रों के प्रकाशन द्वारा अनुसंधान का प्रतिमान स्थापित किया, 20 शोध छात्रों की थीसिस का पर्यवेक्षण किया, अनेक विज्ञान संस्थानों का मार्गदर्शन किया और वहां अनेक नवविधाओं में शोध सुविधाओं की शुरुआत की।

उनका जन्म, 6 जून 1935 को उत्तराखण्ड में कुमाऊँ क्षेत्र के एक छोटे से गाँव अनारपा में हुआ था। स्कूल गाँव से कई किलोमीटर दूर स्थित था। फिर भी ऊबड़-खाबड़, उतार-चढ़ाव और घुमाव भरे रास्तों पर पैदल चल कर स्कूल शिक्षा पूर्ण की। उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यहीं से उन्होंने बी.एससी. और एम.एससी. (भौतिकी) की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। एम.एससी. में गोल्डमेडल प्राप्त हुआ था इसलिए उन्हें विश्वविद्यालय में भौतिकी प्रवक्ता नियुक्त किया गया, साथ ही उन्होंने प्रोफेसर के.बनर्जी के मार्गदर्शन में कार्बनिक क्रिस्टलों से विकीर्णित एकसकृकिरण प्रकीर्णन मापनों के विषय में अनुसंधान कार्य भी शुरू किया और 1962 में पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की।

1965 में उन्हें कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, रिवर साइड, यूएसए में विजिटिंग प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति मिली तो वे वहां चले गए। किन्तु 2 वर्ष बाद ही रूडकी विश्वविद्यालय (आज के आइ.आइ.टी. रूडकी) में भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में वापस लौट आए। उस समय उनकी उम्र मात्र 32 साल थी। 1967 से 1986 के बीच वे रूडकी विश्वविद्यालय में रहे। 1986 में उन्हें राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला, दिल्ली का निदेशक नियुक्त किया गया। जहाँ से 1991 में उन्हें वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक का कार्यभार संभालने के लिए आमंत्रित किया गया। यहाँ से वे 1995 में सेवानिवृत्त हुए।

लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद भी वे विभिन्न प्रकार की अनुसंधान, विज्ञान शिक्षा एवं विज्ञान प्रसार गतिविधियों से जुड़े रहे। उन्हें श्रेष्ठ प्रोफेसर के रूप में साराभाई अनुसंधान प्रोफेसरशिप का सम्मान दिया गया और वे राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला में संघनित द्रव्य सिद्धांत संबंधी अनुसंधान से जुड़े रहे। भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईएसईआर), नए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) आदि स्थापित करने में उनकी निर्णायक भूमिका रही। भारत में विज्ञान एवं शिक्षा के अनेक प्रमुख संस्थानों की संचालन समितियों के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने उनका मार्गदर्शन किया जिनमें शामिल थे आईआईटी, रूडकी, गणितीय विज्ञान संस्थान, चेन्नई, भौतिकी संस्थान, भुवनेश्वर, इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस, कोलकाता, भर्ती आकलन केन्द्र, राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन, आदि। 2019 में जब तक स्वास्थ्य सरोकारों ने बिल्कुल ही विवश नहीं कर दिया तब तक वे नेशनल एक्रिडिशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एण्ड कैलिब्रेशन लेबोरेटरीज (एनएबीएल) के अध्यक्ष के नाते यह सुनिश्चित करने के प्रयास करते आ रहे थे कि जाँच और अंशाकन से संबंधित देश में निर्मित सामग्री अंतर्राष्ट्रीय मानको से कमतर न हो। विज्ञान और विज्ञान अकादमियों में उनके योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इंसा) के सचिव, अध्यक्ष, विज्ञानों की भारतीय अकादमी के

उपाध्यक्ष, विज्ञानों की राष्ट्रीय आकदमी के अध्यक्ष, भारतीय पदार्थ अनुसंधान सोसायटी के अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कॉंग्रेस एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। उन्हीं के प्रयत्नों से उद्योगों और शैक्षणिक संस्थाओं के बीच सहयोग और सहभागिता की शुरुआत हुई।

एक अनुसंधानकर्ता और अनुसंधान मार्गदर्शक के रूप में उन्होंने अनेक क्षेत्रों में योगदान दिया जिनमें प्रमुख थे, धातुओं और विद्युत्तरोधियों में फोनोनों (लैटिस कंपनी) का अध्ययन, संकीर्ण बैंड ठोसों में इलेक्ट्रॉनों के सहसंबंध, क्रमविहीन निकायों की इलेक्ट्रॉनिकी अवस्थाएँ, पदार्थों में पृष्ठ अवस्थाएँ और उनका पृथक्करण, परमाणुओं, आयनों एवं अणुओं में उद्दीपन एवं आयनीकरणकारी प्रक्रम, उच्च ताप अतिचालक, नैनोटेक्नोलॉजी—विशेषकर क्वांटम डॉट्स एवं नैनोट्यूबों इलेक्ट्रॉनों का संचरण तथा संघनित द्रव्य और संघट्ट प्रक्रम।

उनकी अप्रतिम सेवाओं के लिए राष्ट्र ने उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया, जिनमें प्रमुख थे: वाटुमल मेमोरियल प्राइज (1965), शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (1972), सीएसआईआर सिल्वर जुबली अवार्ड (1973), फिक्की अवार्ड (1990), डा. महेन्द्र लाल सरकार प्राइज (1989 वर्ष के लिए 1994 में दिया गया), सी वी रामन मेडल (1999), पद्म श्री (1991), पद्म भूषण (2003)। वे आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका सौम्य चेहरा, मधुर व्यवहार और सामान्य से परे देखने की मेधा सदैव उनके शिष्यों, सहयोगियों और अन्य जानने वालों के दिलो-दिमाग में बने रहेंगे। लोक विज्ञान परिषद के लिए उनका स्नेह और मार्गदर्शन अविस्मरणीय रहेगा। हम ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं और शोक संतुष्ट परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।

— राम शरण दास
rsgupta_248@yahoo.co.in
लोक विज्ञान परिषद

पद्मभूषण प्रोफेसर श्री कृष्ण जोशी –मुर्धन्य वैज्ञानिक एवं कुशल प्रकाशक

(6 जून, 1935-15 मई, 2020)



देश में अनेक ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं जिनकी दूरदर्शिता और अनुसंधान कार्यो ने देश को विशिष्ट पहचान दिलायी। ऐसे ही वैज्ञानिकों में प्रोफेसर श्री कृष्णा जोशी (S K Joshi) का नाम उल्लेखनीय है। वे एक प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी (Physicist) थे, जिनका प्रमुख शोध कार्य संघनित पदार्थों (Condensed Matter) पर था। वे जीवनभर देश के अनेक वैज्ञानिक संस्थानों से जुड़े रहे।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा – प्रोफेसर एस. के. जोशी का जन्म 6 जून 1935 को उत्तराखंड के कुमायूं क्षेत्र के एक छोटे से गाँव अनारपा (Anarpa) में हुआ था। अपने स्कूली दिनों के दौरान, विद्यालय तक पहुँचने के लिए वह पहाड़ी इलाके को पैदल पार करते थे। उच्च शिक्षा के लिए, वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय चले गए और वहां से बीएससी और एमएससी (भौतिकी में) की उपाधि प्राप्त की। यह दोनों उपाधियां उन्होंने प्रथम श्रेणी से प्राप्त की थीं। 1957 में, एमएससी में स्वर्ण पदक विजेता होने के नाते, उन्हें इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी में व्याख्याता के पद पर नियुक्ति मिली। अध्यापन के साथ-साथ, उन्होंने कश्मीर बनर्जी के साथ कार्बनिक जैविक क्रिस्टलों (Organic crystals) से एक्स-रे के प्रकीर्णन (X-ray scattering) के मापन में अपना शोध कार्य शुरू किया और 1962 में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की।

1965 में उन्हें कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, रिवरसाइड, अमेरिका में विजिटिंग व्याख्याता के पद के लिए आमंत्रण मिला। दो साल अमेरिका में काम करने के बाद, वह भारत लौट आए और रुड़की विश्वविद्यालय (अब भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की) में, 1967 में भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए। उस समय उनकी उम्र केवल 32 वर्ष थी।

प्रोफेसर एस. के. जोशी उत्तराखंड के इकलौते भौतिक विज्ञानी हैं, जिन्हें 1994 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, 1995 में कानपुर विश्वविद्यालय, 1996 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, 2005 में बर्दवान विश्वविद्यालय, 2008 में भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा ने डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि दी।

प्रो श्री कृष्ण जोशी का शोध कार्य – पीएचडी के दौरान और अमेरिका में उनके अनुभव के दौरान उनके प्रायोगिक कार्यों ने उन्हें धातुओं और इंसुलेटरों (Insulators) में फोनोन (Phonons) जैसे लैटिस यानी जालक कंपन (Lattice vibration) के सैद्धांतिक अध्ययन में दिलचस्पी दिखाई। उनके कार्यों ने बताया कि धातुओं में फोनोन की आवृत्तियां आयन चालन के लिए चालन इलेक्ट्रॉनों की प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। प्रोफेसर एस. के. जोशी ने इलेक्ट्रॉन अनुक्रिया (electron response) को शामिल करते हुए एक सफल परिघटनात्मक मॉडल (Phenomenological model) का प्रस्ताव रखा। प्रोफेसर एस. के. जोशी ने डी-इंटरैक्टिव एस और डी बैंड मॉडल का उपयोग करते हुए डी-इलेक्ट्रॉन धातुओं (जैसे तांबा और निकल) की जालक गतिशीलता (Lattice dynamics) को समझाया। इस क्षेत्र में प्रोफेसर एस. के. जोशी का कार्य अग्रणी स्तर का था। उन्होंने कोरिंगा-कोह-रोस्तोखर (Korringa-Kohn-Rostoker) पद्धति का उपयोग करके इलेक्ट्रॉनिक बैंड संरचना की जांच की। उनके द्वार आभासी क्रिस्टलों (Virtual crystal) और सुसंगत संभावित सन्निकटन (coherent potential approximation) का उपयोग करके अव्यवस्थित द्विआधारी मिश्र धातुओं (Binary alloys) की संख्या में इलेक्ट्रॉन अवस्थाओं की गणना की गयी। वह उन विशिष्ट भारतीय वैज्ञानिकों में से एक थे, जिन्होंने 1968 में अकादमिक प्रेस द्वारा मेटल्स ऑफ लैटिस डायनामिक्स ऑफ मेटल में प्रकाशित एक अध्याय में सॉलिड स्टेट फिजिक्स (Solid State Physics) पर योगदान दिया था, और इस पुस्तक में अन्य योगदानकर्ताओं में चार्ल्स कटल (Charles Kittel) जैसे विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक शामिल थे। हबर्ड मॉडल (Hubbard model) का उपयोग करते हुए और उसके सामान्यीकरण द्वारा संकीर्ण बैंड लौहचुम्बकत्व (Ferromagnets) में इलेक्ट्रॉन सहसंबंधों (electron correlations) में प्रोफेसर एस. के. जोशी के योगदानों को सराहा जाता है।



प्रोफेसर एस. के. जोशी, 1986 में सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल) के निदेशक का पद संभालने के लिए रुड़की से नई दिल्ली चले गए। यह एक संयोग था कि उच्च तापमान वाले अतिचालकों (Superconductors) की खोज 1986 में भी हुई थी। जालक कंपन (Lattice vibrations) में उनकी विशेषज्ञता ने एनपीएल में उच्च तापमान अतिचालकों में शोध गतिविधियों को आसान बना दिया था।

उन्होंने एंडरसन मॉडल (Anderson model) के लिए एक नए संस्करण की विधि प्रस्तावित की जिससे उच्च तापमान की जमीनी स्थिति का अध्ययन किया जा सके और उच्च तापमान अतिचालकों की सी-अक्ष (c-axis) प्रतिरोधकता का अनुमान लगाया जा सके। एनपीएल ने नैनो टेक्नोलॉजी पर भी काम शुरू किया। प्रोफेसर एस. के. जोशी ने मेसोस्कोपिक प्रणालियों (Mesoscopic systems) में विशेष रूप से, एक एकल क्वांटम डॉट का संचालन और एक डबल क्वांटम डॉट सिस्टम पर इलेक्ट्रॉनों के परिवहन की जांच की।



दूरदर्शी प्रशासक एवं संस्थान निर्माता – प्रोफेसर एस. के. जोशी उत्कृष्ट वैज्ञानिक होने के साथ ही एक दूरदर्शी प्रशासक भी थे। एनपीएल में आने वाले आगंतुकों के लिए, प्रोफेसर एस. के. जोशी ने एनपीएल परिसर में एक अतिथि गृह बनाया ताकि वे कार्यालय के समय से परे भी आराम से काम कर सकें। एनपीएल में अनुसंधान विद्वानों को आकर्षित करने के लिए उन्होंने उनके लिए एक छात्रावास का निर्माण भी करवाया था।

1991 में प्रोफेसर एस. के. जोशी वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के महानिदेशक (18 जनवरी, 1991 से 30 जून 1995) भी रहे। यह वह समय था जो आर्थिक उदारवाद की शुरुआत के साथ मेल खाता था। प्रोफेसर एस. के. जोशी आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (ARIES) की गवर्निंग बॉडी के पूर्व सभापति भी थे। वह पूर्व प्रधानमंत्रियों अटल बिहारी व पीवी नरसिम्हा राव के सलाहकार भी रहे थे। उन्होंने देश में आईसर (IISER), नाईसर (NISER) और नए आईआईटी (IIT) संस्थानों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रोफेसर एस. के. जोशी ने उद्योग अकादमिक सहभागिता बढ़ाने और राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं को डीम्स विश्वविद्यालयों के दायरे में लाने में अहम योगदान दिया। प्रोफेसर एस. के. जोशी राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (National Accreditation Board for Testing and Calibration Laboratories) के अध्यक्ष भी रहे। सन् 2019 में अस्वस्थ होने पर यह पदभार एनपीएल के निदेशक को सौंपा गया।

पुरस्कार एवं सम्मान – उन्हें 1972 में प्रतिष्ठित शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (भौतिक विज्ञान) और 1974 में सैद्धांतिक विज्ञान में मेघनाद साहा पुरस्कार के लिए चुना गया। उनके समूह ने अव्यवस्थित द्विआधारी मिश्र धातुओं (binary alloys) में विद्युत चालकता, हॉल प्रभाव और सतह पृथक्करण जैसे भौतिक गुणों की जांच की। इलेक्ट्रॉन सहसंबंधों में उनका योगदान विशेष था। उन्हें भारतीय विज्ञान अकादमी, बेंगलोर, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA), भारतीय विज्ञान अकादमी, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज इंडिया (NASI), तृतीय विश्व अकादमी ऑफ साइंसेज के फ़ैलो के रूप में चुना गया था। विज्ञान में उनके विशिष्ट योगदान के लिए, भारत सरकार ने 1991 में उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया। प्रोफेसर कृष्णा जोशी को सन २००३ में भारत सरकार द्वारा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था।

15 मई 2020 को हरियाणा के गुरुग्राम में अपने निवास पर 86 वर्ष की आयु में उन्होंने अंतिम श्वास ली। वह काफी दिनों से जांघ के कैंसर से पीड़ित थे और बिस्तर तक ही सीमित थे। हालांकि अंतिम दिनों तक उनके चेहरे पर एक ओज था जो ताउम्र उनकी विज्ञान की साधना का द्योतक था। प्रोफेसर एस. के. जोशी सादा जीवन उच्च विचारों वाले व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी दिनचर्या सात्विक एवं प्रकृति के अनुसार थी। उनका जीवनसंगी हेमा ने उनका भरपूर साथ दिया। प्रोफेसर एस. के. जोशी के सुपुत्र संजय जोशी अमेरिका में एक संस्थान में उच्च पद पर हैं। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद यानी सीएसआईआर (CSIR) के महानिदेशक पद पर रहते हुए उनके द्वारा किए गए अनेक कार्यों ने उनको अमर बना दिया। उनका निधन वास्तव में एक युग का अंत है। भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी जगत में उनके योगदानों को सदैव याद किया जाता रहेगा।

– नवनीत कुमार गुप्ता
परियोजना अधिकारी (एड्यूसेट), विज्ञान प्रसार, vigyanprasar123@gmail.com

प्रतिभा के पारखी और प्रेरक वैज्ञानिक प्रशासक - प्रो० श्री कृष्ण जोशी

प्रो० श्रीकृष्ण जोशी जी से मेरा पहला परिचय दूरभाष और फ़ैक्स के माध्यम से 1994 में हुआ। जब मैं 1992-95 के अन्तराल में टोक्यो (जापान) में भारतीय दूतावास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सलाहकार था। CSIR की भांति जापान की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी (AIST) की प्रयोगशालाएं हैं, उच्चस्तरीय शोध-विकास कार्य होते हैं। AIST जापान की MITI (Ministry of International Trade & Industry) के अन्तर्गत आते थे। उन दिनों फोन पर बात करने में समय लगता था। कनेक्शन बिलम्ब से और उत्तर विलम्ब से सुनाई देना, जैसी दिक्कतें थीं। भारत-जापान के बीच समयान्तर 3½ घंटे था। वहां के समय के अनुसार 5 बजे हमारा ऑफिस सहायक चला जाता था। लेकिन वहां के 8 बजे तक अकेले बैठकर फ़ैक्स से अपनी बात CSIR के DG प्रो० एस. के. जोशी को बताते और वे समुचित निर्देश-फ़ैक्स भेजते। उन दिनों MITI में भारत समर्थक अफसर नहीं थे। लगभग छह-आठ माह के अनवरत प्रयासों से AIST के DG डॉ. कोवासाकी से भेंट हुई, वहां के वैज्ञानिकों से भी मेल जोल बढ़ाया। CSIR के बारे में सूचना सामग्री देते रहे। 1995 के शुरु में AIST के DG को पता लगा कि मेरा तीन वर्ष का कार्यकाल समाप्त होने वाला है, तो उन्होंने एक वैज्ञानिक अधिकारी से संदेश भेजा कि (CSIR-AIST) के बीच संयुक्त शोध-विकास के लिए करार MOU तैयार कराया जाए। मैंने यह अप्रत्याशित संदेश प्रो० एस. के. जोशी जी को भेजा। उन्होंने नौ विशिष्ट शोध-क्षेत्रों में MOU तैयार कर वरिष्ठ वैज्ञानिकों की एक टीम भेजी, और जापान के साथ पहले MOU पर दोनों ओर से हस्ताक्षर किए गए। इसके बाद मैं उनका कृपा पात्र बना। सेवानिवृत्ति के बाद मैंने लोक विज्ञान परिषद के संरक्षक बनने का निवेदन किया जिसे उन्होंने स्वीकारा। 2015 में विज्ञान प्रकाश पत्रिका के संस्थापक संपादक प्रो० राम चौधरी (SUNY, Oswego, USA) के निधन के बाद "विज्ञान प्रकाश" का सम्पादकीय दायित्व मैंने सम्हाला। पत्रिका को रिसर्च जर्नल बनाने के संदर्भ में प्रो० एस. के. जोशी से बात की उन्होंने इसकी सलाहकार समिति में रहकर मार्गदर्शन करते रहने का आश्वासन दिया। उनका सुझाव था कि रिसर्च जर्नल का स्तर ऊँचा रहे, सभी शोध पत्र विशेषज्ञ-समीक्षायित (पीयर-रिव्यूड) हों, विशिष्ट वैज्ञानिकों के आमंत्रित आलेखों को अनुवाद करके भी प्रकाशित किया जा सकता है। 'विज्ञान-प्रकाश' विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का रिसर्च जर्नल वार्षिक ही निकाल सके, समीक्षकों (रिव्यू एक्सपर्ट) के नाम पते, और ई-मेल की लिस्ट भी प्रकाशित करते थे, जिससे पारदर्शिता बनी रहे। 2016 से जर्नल निकाले, 2019 में UGC-CARE रिसर्च जर्नल समिति ने इसे अनुमोदित कर लिस्ट में शामिल किया। इस प्रकार इसमें प्रकाशित शोध पत्र का क्रेडिट प्रोन्नति के समय लेखक के अकादमिक मूल्यांकन में सुनिश्चित कर सकता है।

विधि-विधान से बेबस 2020 का अंक प्रकाशित कर दिखा न सके। 15 मई 2020 को उनके निधन से "विज्ञान-प्रकाश" और 'लोक विज्ञान परिषद' परिवार के सभी सदस्य शोक संतप्त हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे, और परिवार जनों को यह दारुण दुःख सहने की शक्ति दे।

प्रो० श्री कृष्ण जोशी सरल, सौम्य एवं सहृदय विचारक, वैज्ञानिक और कुशल प्रशासक थे। सरलता में छिपी प्रतिभा के पारखी और प्रेरक थे।

भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि।

— ओम विकास

अध्यक्ष, लोक विज्ञान परिषद; मुख्य सम्पादक, विज्ञान प्रकाश
dr.omvikas@gmail.com